बीसीसीआई पर चला सुप्रीम कोर्ट का डंडा

सुप्रीम कोर्ट ने आखिरकार दुनिया की सबसे अमीर क्रिकेट संस्था भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) को लोढ़ा समिति की रिपोर्ट न मानने और लगातार नजरंदाज करने की कड़ी सजा दी है। बीसीसीआई के अड़ियल रुख के कारण उसके खिलाफ तीखे तेवर अपनाते हुए अध्यक्ष अनुराग ठाकुर और सचिव अजय शिर्के को पद से बर्खास्त करते हुए, उन्हें सबक सिखाया है। शीर्ष अदालत ने उनके बोर्ड से जुड़े सभी अधिकारों को वापस लेने का फैसला देते हुए कहा कि क्रिकेट न तो किसी की जागीर है और न ही किसी का निजी टर्फ। लोढ़ा कमेटी की सिफारिशों के अनुपालन में बाधा पहुंचाने और झूठा हलफनामा देने के मामले में अनुराग ठाकुर को कारण बताओ नोटिस जारी किया और पूछा कि क्यों न उनके खिलाफ अवमानना का मामला चलाया जाए? अनुराग को इस मामले में अगली सुनवाई 19 जनवरी को होने के समय तक जवाब दाखिल करना है। यदि वह इस मामले में माफी नहीं मांगते तो उन्हें जेल भी जाना पड़ सकता है। अदालत को इस सख्त फैसले तक पहुंचने की जरूरत क्यों पड़ी? इसकी तफसील में जाने की जरूरत नहीं है। करोड़ों भारतीयों के आकर्षण का क्रिकेट किस कदर सट्टेबाजी और भ्रष्टाचार के कारण विवादों में घिर गया था, यह देश-दुनिया से छिपा नहीं है। फिर इन सबमें बीसीसीआई के शीर्ष ओहदेदारों व उनके रिश्तेदारों की संलिप्तता और इसके बावजूद उन्हें बचाने-छिपाने की जो कोशिशें हुईं, उनको देखते हुए अदालत का हस्तक्षेप लाजिमी था, स्वागत के योग्य भी। बीसीसीआई के अंदर जो कुछ सड़ रहा था, उसकी शिनाख्त और इलाज के लिए लोढ़ा समिति ने जो सिफारिशें की थीं, बोर्ड उन्हें लागू करने से बचने के चोर दरवाजे तलाशता रहा, जबकि 18 जुलाई 2016 के अपने आदेश में सुप्रीम कोर्ट ने साफ-साफ कहा था कि लोढ़ा समिति की सिफारिशें पूरी तरह से लागू की जाएं। भारतीय क्रिकेट को राजनीतिज्ञों की महत्वाकांक्षाओं का खेल होने से बचाने के लिहाज से भी यह एक जरूरी फैसला है। गौरतलब है कि अदालत ने पिछले साल 18 जुलाई को दिए अपने फैसले में क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में मंत्रियों, प्रशासनिक अधिकारियों और 70 साल से ज्यादा उम्र वाले लोगों के पदाधिकारी बनने पर रोक लगा दी थी। बीसीसीआई लगातार यह कहता रहा है कि लोढ़ा समिति की कुछ सिफारिशें व्यावहारिक नहीं होने की वजह से लागू नहीं की जा सकती हैं। पर उसने कभी भी सिफारिशें लागू करने के मामले में सहयोगपूर्ण रवैया नहीं अपनाया है। अगर बीसीसीआई ने इस मामले में अड़ियल रुख नहीं अपनाया होता, तो शायद अदालत से एक राज्य एकमत जैसी कुछ सिफारिशों पर छूट भी मिल सकती थी। अभी बीसीसीआई ही नहीं, तमाम क्रिकेट एसोसिएशनों में यह सिफारिशें लागू होना बाकी हैं, इसलिए अभी तमाम विकेट गिर सकते हैं। लोढ़ा समिति ने जो सिफारिशें की हैं, उसे देश में एक साफ-सुथरे खेल-माहौल की पृष्ठभूमि के रूप में अपनाने की जरूरत है। क्रिकेट समेत देश के तमाम खेल संघों में चन्द राजनेताओं व अधिकारियों का वर्चस्व रहा है और यह देश में खेल जगत की दुर्गति का एक बड़ा कारण रहा है। आखिर कुछ ही दिन पहले हमने देखा कि किस तरह भारतीय ओलंपिक संघ ने सुरेश कलमाड़ी को और बॉक्सिंग संघ ने अभय चौटाला को अपना आजीवन अध्यक्ष चुन लिया था? देश आज भ्रष्टाचार के खिलाफ एक निर्णायक लड़ाई के मूड में दिख रहा है। काले धन के खिलाफ नोटबंदी के सरकारी कदम का जिस बड़े पैमाने पर लोगों ने साथ दिया, वह बताता है कि वे इससे मुक्ति पाने की पीड़ा उठाने को तैयार हैं। बेहतर तो अब यही होगा कि प्रशासक की नियुक्ति के बाद वह सिफारिशें लागू कराकर जल्द से जल्द चुनाव कराकर नए पदाधिकारियों को जिम्मेदारी सौंपी जाए। अब देखने वाली बात यह है कि क्रिकेट के इस मुश्किल दौर में कहीं खेल को नुकसान न हो। इस कदम से बीसीसीआई में पारदर्शिता आना लाजिमी है। पर सवाल यह भी है कि सुधार सिर्फ बीसीसीआई में ही क्यों? इस दायरे में तमाम एसोसिएशनों का आना भी उतना ही जरूरी है।

हादसों से कब लेंगे सबक?

सड़क सुरक्षा सप्ताह पर विशेष

पिछले दिनों एक अखबार के रायगढ़ वाले पन्ने पर सड़क दुर्घटना के शीर्षक पर नजर थम गई जिसमें खूनी चौराहे के आपरेशन की खबर थी इस चौराहे पर विगत दिनों शहर की एक युवा एवं होनहार बेटी की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई थी। इस तरह की असमय मृत्यु हमें जीवन का कुरूप चेहरा भी दिखाती है। यहां यह कहना लाजिमी होगा कि कोई चौराहा खूनी नहीं होता क्योंकि चौक चौराहे महापुरूषों के नाम होते है। बेशक थोड़ा बहुत सड़कों की बदहाल हालत जिम्मेदार हो सकती है या फिर ट्रैफिक कन्ट्रोल की नाकामी और वाहन चालक का नियंत्रण खो बैठना। इन तीनों परिस्थितियों में एक का भी गड़बड़ाना दुर्घटना को जन्म देता है। ऐसी दुर्घटनाओं की परिणिति यदि मृत्यु होती है तो यह एक जघन्य अपराध से कम नहीं लगती।

बहरहाल यहां यह बताना उल्लेखनीय है कि उसी अखबार के दूसरे पन्नों पर इसी शहर की चार नाबालिग बालिकाओं को एक साथ दुपहिया पर सवार एक और तस्वीर भी थी जो हमें समाज की एक और तस्वीर दिखाती हैं जिससे साबित होता है कि हमने इस सड़क दुर्घटना से कोई सबक नहीं लिया। संवेदनहीनता हममें इस कदर बढ़ चुकी है कि ऐसे दर्दनाक हादसे अब हमें खबर से लगते हैं जिसे बहुत जल्द भुलाकर हम अपनी-अपनी पटरियों पर फिर से चलना शुरू कर देते हैं। सब कुछ पहले सा हो जाता है और कुछ पल को थम सी गई जिंदगी फिर से चलने लगती है। इस घटना को स्थानीय विधायक जी ने पूरी संजीदगी से लेते हुए चौराहे की संरचना में खामियों को तुरंत दुरूस्त करने में जो सक्रियता दिखाई वह प्रशंसनीय है लेकिन सवाल यह है कि ऐसा करने से क्या भविष्य में दुर्घटनाऐं नहीं होंगी। बेशक उनमें कुछ कमी आ जाये लेकिन हादसे रुक जाएं इसकी कोई गारंटी नहीं है।

हमारे देश में प्रतिवर्ष लगभग पांच लाख दुर्घटनाएं होती हैं जिनमें लगभग डेढ़ लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है। शेष या तो विकलांगता के शिकार होते हैं या स्वस्थ हो जाते हैं। यदि हम पिछले दस वर्षों की बात करें तो बारह लाख मासूम की जान सड़क दुर्घटना में गयी है। तो महसूस होता है कि ये हादसे महज हादसे नहीं बल्कि कत्ल हैं जिसमें समाज के तीन वर्गों की संलिप्तता स्पष्ट रूप से दिखती है। जिसमें पहला, दूसरा और तीसरा पक्ष क्रमशः प्रशासन, वाहन चालक और जनता है। जाहिर सी बात है इन तीनों पक्ष में सबसे ज्यादा ताकतवर जनता ही है लेकिन यह पक्ष इतना संवेदन शून्य हो चूका है कि इस तरह के हादसों को और खासकर ऐसे हादसों में हुई मृत्यु को नियती का खेल मानकर चुप रह जाता है। चार नाबालिग बच्चियों को दुपहिया पर शहर की सड़कों पर देखना इस बात का ज्वलंत उदाहरण है जो माता-पिता की लापरवाही के साथ-साथ यातायात व्यवस्था को लेकर प्रशासन की तटस्थता को भी दर्शाता है। अब यदि हम प्रशासन के बात करें जिसके पास कानूनी डंडा है तो कई उदाहरण भी है इस डंडे का इस्तेमाल भी चेहरा देखकर होता है। हमारे समाज में ऐसे रसूखदार चेहरे होते है जो मुस्तैदी से कार्य करते प्रशासन पर भी दबाव डालते और उन्हें अपना उसूल तोड़ने पर मजबूर कर देते हैं। उनका असर लांयसेस देने से लेकर परमिट जारी करने तक देखा जा सकता है। ऐसी बातें निम्न तबके के लोगों में आक्रोश पैदा करता है।

मोटर व्हीकल एक्ट 1988 और उसके पश्चात 2016 में हुये संशोधन के तहत दुपहिया वाहन चालक को हेलमेट और चार पहिया वाहन चालक को सीट बेल्ट लगाना जरूरी है पर इस शहर में कितने फीसदी लोग इस नियम का पालन करते हैं। शहर की सड़कों में नाबालिगों को फर्राटे से गाड़ी चलाते हम सभी ने अक्सर देखा है जिसके लिए प्रथम दृष्टया उनके अभिभावक दोषी हैं जो अपने नाबालिग बच्चों को कानून तोड़ने की अप्रत्यक्ष सहमति देते हैं। दूसरी जिम्मेदारी यातयात प्रबंधन की है जो इन पर लगाम कसने के बजाय तटस्थता का लबादा ओढ़ लेते हैं। एक तीसरा तबका और भी है जो कानून का पालन करने की बजाय उसका छिद्रान्वेषण में यकीन रखता है कि ये नियम उनके शहर की बुनियादी बनावट में असरदायक नहीं होंगे। यूं तो यातायात नियम मौजूद है पर फिर भी उनमें सख्ती की जरूरत है। लायसेंस देने की जांच में कड़ाई, लायसेंस में शिक्षा की अनिवार्यता ताकि वाहन चालक शिक्षित होने के साथ संवेदनशील और समाज के प्रति जागरूक हो इससे शिक्षा अभियान को भी सफलता प्राप्त होगी। सड़क निर्माण परिक्रया को गंभीरता से लेना चाहिए और ट्रैफिक नियमों में समयानुसार बदलाव होते रहने चाहिए। पुलिस विभाग अपनी पारंपरिक छबि से निकल कर जनता के बीच अपनी मित्रता को जोड़ने का प्रयास करे। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि शहर का अराजक विकास भी कुछ हद तक सड़क दुर्घटना का कारण होता है।

अंत में मेरा निवेदन है कि शहर की जनता जिसके पास प्रशासन की तुलना में कहीं ज्यादा ताकत है पर वह शायद इससे अनभिज्ञ है। यदि वह अपनी ताकत का सदुपयोग करे तो हादसों पर एक हद तक अंकुश लग सकते हैं इस तरह के प्रयास असमय सड़क दुर्घटना में काल कल्वित हुये लोगों को दी गई सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आशा त्रिपाठी
रायगढ़।

क्या सुप्रीम कोर्ट के फैसले को मानेंगे राजनीतिक दल?

सर्वोच्च न्यायालय के सात न्यायाधीशों की संविधान पीठ ने बहुमत से जो फैसला दिया है वह धर्म, नस्ल, जाति, समुदाय और भाषा के आधार पर वोट मांगना या चुनावी प्रक्रिया को प्रभावित करना जनप्रतिनिधित्व कानून के प्रावधान के तहत भ्रष्ट तरीका माना जाएगा। निश्चित तौर पर एक ऐतिहासिक व दूरगामी फैसला है। बेशक ऐसे फैसले आने में 21 साल लगे पर यह स्वागतयोग्य और सराहनीय है। अगर शीर्ष अदालत के इस फैसले को निर्वाचन आयोग प्रभावी ढंग से लागू कराने में सफल हो जाए तो देश की चुनावी राजनीति के शुद्धिकरण की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन आ सकता है। प्रत्यक्ष को प्रमाण क्या? पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों की घोषणा हो चुकी है। चुनाव आयोग के पास यह सुनहरा अवसर है सुप्रीम कोर्ट के आदेश को सख्ती से लागू करने का। पर सवाल यह है कि क्या यह फैसला दिशानिर्देश की तरह काम करेगा या फिर व्यवहार में इसे कानूनी तौर पर लागू किया जा सकेगा? बेशक यह अच्छा हुआ कि सुप्रीम कोर्ट ने यह स्पष्ट कर दिया कि जाति, मजहब, समुदाय, भाषा के नाम पर वोट मांगने को भ्रष्ट चुनावी तौर-तरीका माना जाएगा। कायदे से तो ऐसी स्पष्टता की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए थी, क्योंकि सभी को पता है कि जाति, मजहब अथवा भाषा और समुदाय के नाम पर वोट मांगना एक तरह से एक वर्ग को दूसरे के खिलाफ खड़ा करना है। ऐसा कृत्य समाज को बांटने वाली राजनीति के अलावा और कुछ नहीं है। हालांकि जनप्रतिनिधित्व कानून के तहत कोई उम्मीदवार जाति, मजहब, समुदाय या भाषा के नाम पर किसी को मत देने को नहीं कह सकता, लेकिन सुप्रीम कोर्ट को नया फैसला इसलिए देना पड़ा, क्योंकि इसे लेकर भ्रम था कि किसके मजहब, जाति, समुदाय या भाषा आदि का उल्लेख निषेध माना जाए उम्मीदवार के या फिर उसके विरोधी के अथवा मतदाताओं के? अब यह स्पष्ट हो गया कि प्रत्याशी और उसके विरोधी उम्मीदवार के अलावा मतदाता के भी मजहब इत्यादि का प्रयोग नहीं किया जा सकता।

सर्दियों में ग्लोइंग त्वचा के लिए अपनाएं ये तरीका

सर्दियों में त्वचा को केयर की ज्यादा जरूरत होती है. क्योंकि इस दौरान हम पानी कम पीते हैं, जिससे त्वचा की नमी खो जाती है. ऐसे में इन सर्दियों में अगर आप अपनी त्वचा का ग्लो खोना नहीं चाहतीं तो ये तरीके आजमाएं...

प्यास न लगे, तो भी पीयें पानी

सर्दियों में प्यास कम लगती है. इसलिए लोग पानी भी कम पीते हैं. इस मौसम में त्वचा ड्राई होने की ये सबसे बड़ी वजह है. इसलिए प्यास लगे या न लगे पानी पीते रहें. दिन में कम से कम आठ से दस ग्लास पानी जरूर पीयें।

खाने में हो सभी पोषक तत्व, फल को न भूलें

पोषक तत्वों की कमी या खानपान में कमी की वजह से भी त्वचा खराब होने लगती है. ऐसे में सर्दियों में कोशिश करें कि ज्यादा से ज्यादा फल खा पाएं. इससे आपकी त्वचा पर चमक भी आएगी।

ग्रीन टी का जादू

दूध और अदरक वाली चाय आपको जितनी पसंद है, हो सकता है ग्रीन टी आपको उतनी टेस्टी न लगे। पर एक बार अगर आपने पीना शुरू कर दिया तो आपको इसकी आदत भी हो जाएगी। यह न केवल आपकी त्वचा को खूबसूरत रखेगी, बल्कि आपको मोटापे के खतरे से भी बचाएगी. इससे किडनी की बीमारी की आशंका भी कम होती है।

इन्हें भी आजमाएं

खाने में टमाटर, बीन्स, अनार, नट्स जैसे कि काजू, अखरोट, बादाम आदि शामिल करें. सर्दियों में आपकी त्वचा खिली-खिली रहेगी।

सर्दियों में फटे होंठ को कहें अलविदा

सर्दियां आते ही होंठ फटने लगता है। इसकी मूल वजह है पानी की कम पीना. दरअसल, सर्दियां आते ही हम पानी की खपत कम कर देते हैं, जिसकी वजह से त्वचा और होंठ फटने लगते हैं. इन सर्दियों में अपने होंठ को खूबसूरत और नर्म बनाना है तो खूब सारा पानी पीयें और ये उपाय करें। आपकी त्वचा की तरह आपके होठों को भी नमी की जरूरत होती है, इसलिए पानी, फल और सब्जियों का खूब सेवन करें। बाहर जाते समय एसपीएफ युक्त लिप ग्लॉस लगाएं. क्योंकि आपकी त्वचा की तरह धूप और धूल आपके होठों को भी नुकसान पहुंचा सकते हैं. होंठ काले पड़ सकते हैं। ज्यादा रूखी त्वचा और फटे होठों के लिए ग्लिसरीन भी घरेलू औषधि के रूप में उपयुक्त है. इसे होठों और आंखों के आसपास के हिस्सों पर लगाएं।

खाना खजाना — भरवां लौकी

आवश्यक सामग्री

- 1 बड़ी लौकी
- 1/2 कप पनीर, किसा हुआ
- 1/4 कप प्याज, बारीक कटा हुआ
- 1 चम्मच अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट
- 2 चम्मच बारीक कटा हरा धनिया
- 1/2 चम्मच अमचूर
- 1/2 चम्मच धनिया पाउडर
- 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- नमक स्वादानुसार

ग्रेवी के लिए

- 2 कप टमाटर, कटे हुए
- 2 चम्मच तेल
- 1 छोटा टुकड़ा दालचीनी
- 3 लौंग
- 1/2 चम्मच अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट
- 1 चम्मच धनिया-जीरा पाउडर
- 1/2 चम्मच लाल मिर्च पाउडर
- 1/4 चम्मच हल्दी पाउडर
- 1/2 चम्मच गरम मसाला
- नमक स्वादानुसार

बनाने की विधि

✸ लौकी छोड़कर सभी सामग्री को एक बाउल में अच्छी तरह मिला लें और भरवां के मिश्रण को अलग रख दें।

✸ अब लौकी को लंबा काटकर 2 भाग में काट लें और दोनों भाग के बीच का गुदा निकाल लें. अब दोनों भाग के लंबे टुकड़ो में काट लें।

✸ एक नॉन-स्टिक पैन में लौकी के टुकड़े, नमक और पानी डालकर अच्छी तरह मिला लें. पैन को ढककर मीडियम आंच पर 5 मिनट तक लौकी के टुकड़ों के नरम होने तक पका लें।

✸ अब इन्हें छानकर हल्का ठंडा करने के लिए अलग रख दें.

✸ पनीर के भरवां मिश्रण को लौकी 10 भाग में बराबर भर लें और इन्हें एक तरफ रख दें.

ग्रेवी के लिए

✸ टमाटर को 1 कप पानी के साथ एक गहरे नॉन-स्टिक पैन में डालकर मीडियम आंच पर 5 मिनट तक पका लें और फिर हल्का ठंडा करके इसका मिक्सी में पीसकर इसका पल्प बना लें।

✸ अब एक नॉन-स्टिक कड़ाही में तेल गरम करें और उसमें दालचीनी-लौंग डालकर कुछ सेकेंड के लिए तल लें। अब उसमें टमाटर का पल्प, अदरक-हरी मिर्च का पेस्ट, धनिया-जीरा पाउडर, लाल मिर्च पाउडर, हल्दी पाउडर, गरम मसाला और नमक डालकर अच्छी तरह मिला लें।

✸ ग्रेवी के मसाले को मीडियम आंच पर 5 मिनट तक चलाते हुए पका लें और एक तरफ रख दें।

✸ सर्व करने से पहले भरवां लौकी के टुकड़ों को एक पलेट पर रखें और गरमा गरम ग्रेवी को ऊपर डालें और हरी धनिया से सजाकर रोटी या राइस के साथ सर्व करें।

शब्द सामर्थ्य - 04

बाएं से दाएं

1. राजद प्रमुख 6. रखवाला, रक्षा करने वाला 7. दयालु, रहम करने वाला (उ.) 10. युग्म, जोड़ा, एक राशि, एक फिल्म अभिनेता 13. कैदखाना, जेल, हिरासत 15. जानकी, जनकनंदनी 17. व्यर्थ की बात, बकबक 18. नारी, स्त्री, महिला 21. विक्रय करना 22. वाणी, कथन, वादा 24. ताश में दस अंकों वाला पत्ता 25. नगर का, नागरिक, चतुर।

ऊपर से नीचे

1. बेफ्रिक, निश्चिंत, जिसे कोई परवाह न हो 2. मूर्ति 3. दोस्त, प्रेमी 4. कुशल, विशेषज्ञ 5. बगुला 8. झुका हुआ, झुकाया गया, नत 9. इधर-उधर, पास पड़ोस 11. किस्मत, तकदीर, भाग्य 14. बंदर, मर्कट, कपि 16. शक्तिशाली, बलवान 18. संतान, संतति 19. अस्तबल, घुड़साल 20. राजी करना, रूठे हुए को प्रसन्न करना 23. सरिता, नदिया, नद।

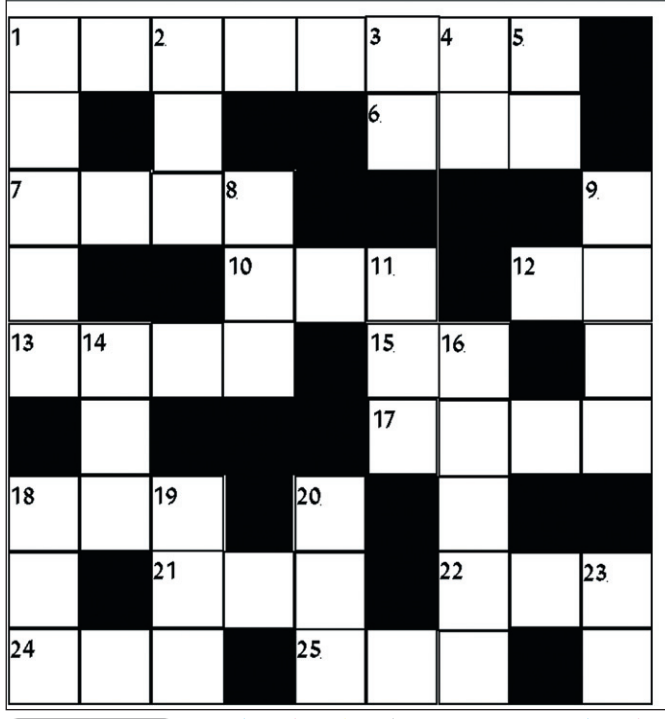

हल-:शब्द सामर्थ्य - 03

मा	म	ला	■	सि	वा	य	■	कि
लि	■	चा	ह	त	■	म	म	ता
क	सू	र	■	म	ग	न	■	ब
■	र	■	■	■	द	■	■	■
क	मा	न	■	पा	र	स	■	स
मी	■	म	जा	ल	■	न	क	ली
ना	दा	न	■	ना	र	द	■	का
■	मि	■	■	■	तौं	■	■	■
सु	नी	ल	■	अ	धी	र	■	जी

सू-दोकू -04

	9		1	6		2		7
3								
		6					9	
7			5		1		3	
	8			9		6		2
		4					7	
	3				2	9		6
6		7	3					4
	4			1		7	8	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

हल-:सू-दोकू - 03

2	6	3	9	8	7	1	5	4
8	5	1	3	2	4	6	7	9
9	4	7	1	5	6	8	2	3
3	9	8	6	7	1	5	4	2
6	1	2	5	4	3	9	8	7
5	7	4	8	9	2	3	1	6
1	2	6	7	3	5	4	9	8
4	8	5	2	6	9	7	3	1
7	3	9	4	1	8	2	6	5

राशिफल

मेष - कार्य अनुसार ही लाभ के भागीदार बन सकते हैं। आर्थिक स्थिति में मजबूती आने के योग प्रबल हैं। सप्ताह के मध्य तक रूका हुआ या कर्ज दिया गया पैसा मिल सकता है।

वृषभ- कर्मभाव को ऊर्जान्वित बनाए रखना आपके हाथ में है। अपनी सक्रियता में कमी नहीं आने दें। परिवार की खुशियों के लिए किए गए प्रयास सफल होंगे।

मिथुन - नई नौकरी की तलाश सार्थक साबित हो सकती है, लेकिन नौकरी में तरक्की की संभावना कम है। परिवार के सदस्यों को भावनात्मक सहयोग देना होगा।

कर्क - कार्यक्षेत्र में सहकर्मियों का सुझाव लें और उनसे खुलकर बात करें। जीवनसाथी संग भावनात्मक सौहार्द बना रहेगा और आप कहीं घूमने जाने का कार्यक्रम बना सकते हैं।

सिंह - परिवार में सुखद वातावरण बना रहेगा। दांपत्य जीवन में भले ही रोमांस और प्रेम-प्रदर्शन की स्थिति अनुकूल बनी रहेगी, लेकिन प्रेमियों को विरोध का भय सता सकता है।

कन्या - परिवार में अतिथियों का आगमन होगा और खुशियों का माहौल बना रहेगा। जीवनसाथी संग रोमांस की यादें ताजा करने के अवसर मिलेंगे। परिवार भविष्य की योजना भी बना सकते हैं।

तुला - कार्यक्षेत्र से लेकर घर-परिवार में शांत और सहयोगी आचरण बना रहेगा। नौकरी में सप्ताहांत आते-आते कार्य का बोझ बढ़ सकता है, जबकि पारिवारिक सदस्यों के प्रति जिम्मेदारियां कुछ कम हो सकती हैं। यात्रा पर जाना जरूरी होगा।

वृश्चिक- प्रोफेशन में तरक्की संभव है या नौकरी में पदोन्ति मिलने वाली है। यात्रा पर जा सकते हैं। किसी तीर्थ की भी यात्रा हो सकती है। स्वास्थ्य सामान्य रहेगी।

धनु - कार्यक्षेत्र में सक्रियता बढ़ेगी। किसी बड़ी योजना को शुरू करने का हौसला बना रहेगा। नौकरी में तरक्की मिल सकती है। परिवार में माता-पिता का ख्याल रखना होगा।

मकर - दांपत्य में सुखद संतोष बना रहेगा। प्रेमी-युगलों को शुभ संदेश मिल सकता है। स्वास्थ्य के संबंध में बेहतर स्वास्थ्य को लेकर डाक्टरी सलाह आवश्यक होगी।

कुंभ - इस सप्ताह प्रोफेशन, आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य और परिवार के मोर्चे पर कुछ-न-कुछ लाभकारी परिणाम अवश्य देखने को मिल सकते है।

मीन - कामकाज की व्यस्तता और परिवार में सदस्यों के आगमन-प्रस्थान का सिलसिला बना रहेगा। खुद के साथ-साथ परिवार के बुजुर्ग सदस्यों की भी देखभाल करनी होगी। वैसे आपको पैसे की समस्या नहीं आने वाली है।